

[illegible]

॥ ॐ विविक्वालाय नमः ॥ ॐ ममहाकालाय नमः ॥ ॐ तिष्ठ
यः ॥ ततमः ॥ ॐ आध्यात्मिकाय नमः ॥ ॐ कर्माय नमः ॥
॥ ॐ अतनाय नमः ॥ ॐ यद्वा नमः ॥ ॐ यद्वाय न
मः ॥ ॐ कालिकाय नमः ॥ ॐ अद्वैत्याय नमः ॥ ॐ ज्ञान
ाय नमः ॥ ॐ नीलाय नमः ॥ ॐ ताम्राय नमः ॥ ॐ कर्माय
नमः ॥ ॐ श्रीकामदेवाय नमः ॥ ॐ तिष्ठयः ॥

॥ तता सुबुद्धलवुद्धवयु वामावर्त्तन ॥ ॐ ह्रीं उक्ता नीगमये नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं यामिनी नमः ॥ ॐ ह्रीं उक्ता नीगमये नमः ॥ ॐ ह्रीं रत्नव
नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं वीर्य नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥
ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥
ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥
ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥
ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥ ॐ ह्रीं मद्राश्विन नमः ॥

गकिन्येनमः॥ ततामूलं नतमा नतने वं धादिकीदद्या॥ तता
 मायाधितिवर्लिदयं॥ तपुः॥ सर्ववृद्धियुयवविनाथस
 र्वसिद्धियुयगकिताथवजववावतीयतश्चदि वंसेवलिग
 क्रममसिद्धिदि२३॥ रुद्राद्या॥ नं तामूलं दत्तादित
 नेष्टदद्यात्पुण्यांजलिं दत्तुं यमात्मानं सावेचिद्वारुणं
 वावतीथविद्वद्विन्नमस्तुयथासदितान्नादवियुय

दया०॥ ॐ ति मय्यामध्यं दृजति वा ध्यात्वा मनः ऊर्य०॥
॥ श्रीं श्रीं श्रीं वदववाचतियं श्रीं श्रीं रुद्रस्वाहा॥ मूलमं
तुष्ट॥ ऊयदभाति न सकृत्वा द्वाभूगमनान ऊय० तमादि
पुव० पुन न्यासु मन्तं नतिमालि यूस्यमर्कगृही विडकन
स्यादिनि। केषु। सीतानमूडयुदग्धं शुक्लावाययवामना
सायूटतया निमूडासमानं रायदायकलिकाकावां रुद्र

यतिवर्चस्य कलामिक्कम १४ द्वा गताचि ॥ पुनः ॥
 त्रिविधं ॥ तन्मन्त्रं ॥ कुंडलं च निखनं जातं हृत्पथि वर्तते
 सिति ॥ बुद्ध्याति समूहना गच्छदविममानकं ॥ ततो ह
 कया विदुषादि तिवर्ध ॥ ॥ वाग्वलियदानं तु यत्तु ४ यथ
 मग्ननादिय कुर्यात् ॥ ततो ह ॥ यथै नमः ॥ ततो ह
 सनाजमध्व विनसच्चत्वं कयूषा रूपा राख शास्त्रं नमः ॥

लीतद्वयवयधा त्विक्कं मद ७ ॥ तन्मध्यविद्यवीतमैथून्यन ८
प्रयुन्नतकासिती ९ ॥ यश्चक्रीतनूपाककाटिविसर्गडा ४
स्वर्ग्यागिता ॥ १ ॥ वामक्षिन्नगिवाधनातदितवधा (लोचु
हकारिकां प्रत्यालीरयदादिगतवसनात्मन्मूककांगु
जा ॥ क्षिन्नान्मीयगिवसमूचवदसृष्टुमवाविदन्तीयवावा
लादित्समस्यकागविलगन्गुयथाहासिनी ११ ॥ २ ॥

॥ वामादन्त्यपुनः वदुवदस्तगत इक धावाति नूद्व ॥ घाय
नाम हि सुवकिनकमल लस खट्टकामूरानूया ॥ नकारा
नक कंगमयगतवसनीवपुतिमान्काः ॥ प्रत्याली
शानूयादामनूगत नयतीया गित्ताः थाग तिडा ॥ ३ ॥ दिव
लुगिस्वकेगपिलयद्यनद्यदी धीनगदीयवधुं ददादू४
सुनवकीदनविवनलसल्लाल जिह्वापनासा ॥ विद्यु

लालाकियुग्माद्वयतालसङ्गा गिशीमासुदासां सद्य
दिनात्मकी ॥ ४ ॥ युगलितनूधिवेजकिती ॥ वव्वयती ॥ ४ ॥
॥ वृक्षभानाद्युता ॥ ४ ॥ लिनसिवितिदितामन्ययादाववि
ल्ये मन्मिदुधो गिमूखे ॥ ४ ॥ प्रतिययमतिर्गचिन्हाताचि
क्यनूया ॥ सीसानसा वरुणां लिशुवणजनती किन्तम
सां युगसां तिस्रानामिषुदाति कलिकनूषदवावि

तस्माच्चिन्तयामि ॥ ५ ॥ उद्यत्किमुतिर्नृणां तिर्घट्यतु यत्नं
तिवृत्तिर्नृणां तेषु नृणां गुणगता यद्यपि विवृतिवृत्ता चर्या ४
मूलधृक् ॥ तामाद्यायुक्तस्मिन्नामिमनसर्वाथसंसिद्ध
यस्या ४ स्मन्वयदानवित्ययूगलला रजिजने
मला ॥ ६ ॥ अलियिनितायुन्यायाग यजानवादी
वद्विधजनरावा नृसंरावितादी ॥ यमुजनविनगादी

रजवासीनितादी गुनवचनपवादी रजवादीनिवादी ॥ ७ ॥
॥ ४० मंसर्वमहायुर्व बुद्धगता विरयवा ॥ यथा १० युक्त
तत्रुक्तथ दद्या ४ सीनिधिगयिता ॥ ८ ॥ तस्य सिद्धिरवद्व
वी वा ४ गुणाथयुदायिता ॥ धनं धनं ययुजायां हय
हस्तिनमवव ॥ वसू धनमहाविद्या मदासिद्धिलरुद्व
॥ बुद्धा कतिगह्मास्व ॥ तथा युथाग ४ ॥ लिखितं च

सूत्रयामलुसाधकः॥ वाक्त्रयेऽकलियेवै॥ ४ ॥ पूरेष्वदिय
थाकुर्मि॥ तथ्यगस्यविधानतः॥ दधमिद्विऽयवर्कता॥ ५० तीर्थ
काथितादधी॥ समाश्रितममयुथ॥ विगवऽयवर्कमि॥ ५१
दवियथाकुर्मि॥ अथशामविधिर्वै॥ वाग्त्रयेणमवायुया॥ ५२
॥ यतसम्यविधानतः॥ सर्वसिद्धिऽयुजायत॥ विधायमगुलये
द्वै॥ यजाकवायथाविधि॥ यद्वाणमगुलयेव॥ नमस्कृत्यन

माचनं॥ कृत्वाकर्वागयान्यासमेकविकाराववस्त्रितु॥ त्रिंश
चमिगुलस्याथ॥ शामकर्मसमाचनं॥ ततःप्रावादयैदग्नि
यद्वाणमगुलवूधः॥ दधी॥ यथादिताधिया॥ वद्वाणमस्य
कर्मणि॥ प्रावादनेसामलुण॥ तमेवस्त्रायनवर्क॥ ततोदा
मप्युक्त्वानिमिद्विऽकुसुमसुथा॥ लीरुलानायिलान्मनानि
थिवागुमुनस्यच॥ सर्वसिद्धियुदाशामा॥ विधागयऽययनतः॥

॥ सात मन्त्रा कनकदा जय कृत्यानि ४ यत्र ॥ मालागी कसूमिदमि ४
दाके शो मधु सीयुते ४ ॥ दृगनसहिता वायि वागी सख्युदाय
दा ४ ॥ अथ युकानरकान वलिदय ४ मरुमि वेश ४ वगमा
सीदधियुक्तान लक्ष्मी सुस्य मुनि गृह ॥ कागमसिसुधिवि
द्युत न प्रोविर्ति ४ ॥ यो जहात्ययुतं दिवि न जातस्य वगमा
रव ४ ॥ (पुनः) न कनवीनं ४ होमसम्यक् कर्तव्य ४ ॥ लक्ष्मी

मार्ग विधानेन जीवय कालदक्षकी ॥ तिलतुल्लक्षो मधु द्यु
तनस हयपुत्र ४ ॥ जगन्नितास्य मन्त्रानि आयतवनसु
न्दरि ॥ अथ कनकवीरानि न कचन्दनयावक ॥ मया जानि
वगी कृत्य प्राप्तिमदगी २ ग्रियी ॥ याय नवनयनं द्रोमी द्यु
तनस हसुन्द वि ॥ लिम्बि र्थ मसमाशुन वागी गख्यु
दायक ४ ॥ अथ नवनयनं म कामनाया विगद्यत ४

॥ अथ समवृत्ता लोकाः ॥ वामदक्षिणतः मयः ॥ अथ देवावर्गः
॥ किं कियूत ४ इन्द्रमानूषा ४ ॥ निष्ठीवर्ददन्तका ४ ॥
॥ दक्षिणतः ॥ नाम्नामधकक्षोभन ॥ तिलाक्षीवर्गमातृ ३ ॥
॥ नडास्वलायानकांत यूकामूर्धागुरुसाजर्न ॥ सहिर्गमानूष ४
॥ वी ४ ॥ सद्यञ्जकवर्ग ४ ॥ वृन्मीसेनसाधन ४ ॥
॥ हार्मिववानतः ॥ सर्वसिद्धिमवाप्नाति ॥ सुयोगमपि दुर्लभं ॥

॥ यल्ललीमाहिर्षीकृत्वा मधूनासरसुन्दवि ॥ सी मृयत्यागुगुर्ना
॥ वलीद्वयविमर्गती ॥ वीयकीद्युतसीयूकी ॥ इत्थानगवनात्मज ॥
॥ विपुसेन्यामहाधोर्न सीमृथदविनात्युथ ॥ सद्यः ॥ गममायू
॥ मसिन ॥ हातवीसुवयायुती ॥ नूनदक्षरवक्तव्य सर्वसिद्धिय
॥ वर्तते ॥ ॥ गममायूहामयदागु ॥ धनदत्तसमीरव ॥ अथ
॥ कुङ्कुमावाणी ॥ वाक्श्रविनिवर्तय ॥ गीहलनीयल ॥

नो. ६०० वादुम्वनस्य ॥ यो लोको लोको नो. ६०० वादुम्वनस्य ॥
माहव ॥ महामासिनय ४ कष्टि ॥ मयनमद्यसीयुत ॥
॥ गतमहाकर्वयव. विसर्धसाधकात्मम ॥ सदुक्तमादि
ना. सदा ०. वपामासनन ॥ गय ॥ ग. ॥ सयययक
गकिन्यातिसीयुता ॥ १. कोकिलोत्तकयकतु. य. ॥ ला
तिविगानल ॥ समावयतिगुनी. व. ॥ इ. ॥ न. ॥ यि. ॥ र्ग. ॥ त. ॥

कयककता. लामा. ध. ॥ सु. ॥ न. ॥ मो. ॥ समादिता ॥ १. ॥ आनाथकदूत
लन. स. ॥ य. ॥ उ. ॥ द. ॥ वा. ॥ ट. ॥ मा. ॥ व. ॥ ले. ॥ ॥ ग. ॥ त. ॥ कि. ॥ का. ॥ य. ॥ ति. ॥ थ. ॥ य. ॥ दू. ॥ डी. ॥ क. ॥ र. ॥ प. ॥ र्ग.
क. ॥ गु. ॥ मा. ॥ व. ॥ र. ॥ ॥ व. ॥ गी. ॥ का. ॥ य. ॥ ति. ॥ थ. ॥ य. ॥ दू. ॥ डी. ॥ क. ॥ र. ॥ प. ॥ र्ग.
व. ॥ ली. ॥ कु. ॥ ठे. ॥ ला. ॥ का. ॥ री. ॥ क. ॥ य. ॥ ति. ॥ थ. ॥ य. ॥ दू. ॥ डी. ॥ क. ॥ र. ॥ प. ॥ र्ग.
ग. ॥ थ. ॥ य. ॥ ति. ॥ थ. ॥ य. ॥ दू. ॥ डी. ॥ क. ॥ र. ॥ प. ॥ र्ग.
ग. ॥ थ. ॥ य. ॥ ति. ॥ थ. ॥ य. ॥ दू. ॥ डी. ॥ क. ॥ र. ॥ प. ॥ र्ग.

ASFA ARCHIVES 3035

125 1000 1000 1000 1000

101173 12127 113114, 11746

॥ अथर्वयुवकाणि शृणुददिव्यथाक्रमं ॥ मनुष्यान्वर्णयुवका
 मि तथा व्यक्तमनुक्रमं ॥ आवाहनं न्यायं तथैव तथा कथं नैव
 मा ॥ लक्ष्मीलक्ष्मीति धामोयं माणादादग्नदग्निका ॥ वज्रवैद्य
 वनीयं व मायैव त्वाद्यायुतं ॥ लक्ष्मी विजयदायस्य कदा
 गी ॥ सर्वतामूची ॥ लक्षावीजं न्यायं वधतयितियायित ॥
 ॥ मायावीजं न्यायं महायातकनागर्ण ॥ माणादादग्नदग्निका

भाद्यस्या नूक्ति दायकी ॥ जूनादिवीजमनी वा कीर्त्तयन् नूति
 नूमे ॥ वडा वेवाचनी अस्या माया वीजगतयत्री ॥ रुद्रस्वा
 ह्या समायुक्त मनुमाद्रुवनूक मी ॥ ०० तिक्कि नूमेसाये हली ॥
 ॥ नातो शुभान विन्दीत इय विविमल मणुलीय पुन ॥ ४४ ॥ सीसा
 नये कसानी निरुवन अनती ॥ धर्मक भदि बायी ॥ तस्मिन्
 (अ) लिमा गतिरयतनू धनी विवमरु सुसरु ती वन्दे ॥

न भूयामन्नगत्तयहर्वात्मिनीश्यागमूदी ॥ ॥ अद्भुतवि
षनिदान्यद्भुताशूनगलाकया ॥ निरुह्यायनवद्यसित
सौगुण्यवनमः ॥ माहकार्यनमः ॥ किमुदयति सीसा
नात्वात्मायकागद्विषयमंगुनीषशुकिनीयनमस्तु
रुमध्वयनमंगुनीशुकावातिनाकावस्तुन्यस्तुन्यविवर्कि
नशुथवागर्तुवीविद्यागुलावर्त्यनहावितिनियममध्व

८०७
 वृजाल्यादिधानात्मैतावत्कान्तान् जावुक्कासखदिविष्
 तमादवमहंघनयस्यामूक्यति ॥ नाशोगुशानविन्दति ॥ गु
 शीयीनयथाधनान्तिनयनरिवन्देन्दुयुक्ताजटा यक्षयेन
 कृतासनीननगिनीमालागलसारिणी ॥ वन्द्यकश्यायिणी
 नीलकण्ठगुणध्यामितीदृक्किं वासंजकिनिग्यामल
 लिजगतामाद्यारुज्ज्यामदी ॥ चक्रवर्तिनी भूभूवर्चस

मिमांसुर्लुकोवात्मवस्तु दिक्षु लुषाउगायकालितगिरिनि
स्वाकृष्टयगाधिनूरा ॥ तगास्त्रनकयनीजगदद्यदवर्गम
तनाजस्त्रनूया काद्यादिययकागतिरुवपनमितीगादि
मीचिन्नवक्र ॥ ॐ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥
॥ मूल ॥ ॐ सूर्यसमायत्वादा ॥ ॐ चतुर्लसूर्याय जां जां ह्रं
॥ ॐ सूर्याय यादू कायूजयामि ॥ ॐ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥

की ॥ ॐ वरुध नलकालयादू कायूजयामि ॥ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥
नसिद्धिनकाविनीगीरुकाविनिजम्मेकाविनिर्कृतकाविनी
ह्रं सूर्यो ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥
लिनियं ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥
मंगुलीनमजां जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥
॥ ॐ जां ह्रं द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥ ॐ द्यो गच्छ तग्वनसूदनीद्वन्द्वीस्त्री ॥

॥ ध्या नय चर्कया मला कृत्वा ॥ योरा श्री वज्रगानि वणि वत
नूजा चाननूया समूय ॥ त्रि लोके संहननी दू विग सवन दोगा
विगी सा ध काना ॥ कृत्वा नूयान् नखा विव दित मन सा था गि
ती क्ति न म स्ता ॥ लो ग्य सा लो गि ती साम दन वति कला या तु मा
या यदा सा ॥ ति वणि वाण द ह ॥ विगि यानि वि नू या वा नू वि
ना विधि ना ॥ यत्वा नूरा सन स्म नू ग व न नि व या थो व ता थो

स्व नू या ॥ सान न्दारा गि ती या गति वण वि ज या म ग ला सा य ना
ता ॥ सा न्म लामू क क गी द द गु व न म सी सा ध क क्का य म ना ॥
॥ ॐ ति य्वा खा ना ज सु न्द वी ॥ ॥ वि नू या क म त ॥ न वि
ना म य मी स न व लि ना न व सि द्ध ति ॥ सर्व या य द न म
नु ६ सर्व सि द्धि द द ति य ॥ व लि तु क्का ज य द वी मि ति ॥
॥ का पा ति क म त ॥ नू क या ल म दि वी क्त्वा सी य्वा यी व लि

दत्तात्मयीति श्रुत्वा स्वीययिनीं वा वनसु मात्माय विविच्य वा त
जं द्या क्रियमाणमनुजाया विधीय ॥ अतनयिक ली सिद्धि
नान्य सिद्धिः यजायत ॥ यदि सुसीता गमनरुवति तदा
अगमयत उद्धिष्ट ननामेतदुवाति गमयति य ७ ॥ श्री ग्रावा
र्यस्य स्वपुत्रवचनं यनवनमवादि ॥ यवदायनमदिनवि
लिदत्वा स्वयं च गविल्लयुनिगमस्वात्तत्वासा तन्दयं तस्मा वि

कल्पियवित्पञ्चसायवी अरुमि गिराव चित्वा जयदिति ॥
॥ ययं कामयतमन्तु गीसाधयति ध्रुवी ॥ वक्ररुत्यामहो
यायं सद्यः शानायतं ध्रुवी ॥ यविमयदत्त ॥ सरुवति राव
यानं पुद्गलसिमानमानं वृत्तद्वय दूयवान् कामना जाति
गानी ॥ न जानि विदित्ति दिश्वामदमनयुर्ध्वं वयुषि कलू
षपुद्गलमन्तु रा ननसि दित् ॥ जायद्वयानमूनिष्ठं हृ

॥ नामो धनवता ॥ सदा काले जाये मनु निष्ठ सिद्धि द्य
जायत ॥ न (७) नाज कुल द्युत संयम विधु संकट ॥ च ४
सदा जयेत नित्या मा धिस्त स्य न विद्यत ॥ तान्ध विजास
न दिवी २ दिने मस्त कसे युगा ॥ गदा गौरि वध न विना
द क व क व द युदी ॥ काटि सूर्य युती का गी त क काय
न स युती ॥ नाना न गि स मा यू का नाना त व ग ह वि ता ॥

॥ मुक्ता धादि गण धी ग तेन वै ४ स ह स यू ता ॥ द ग्रा य क
कृती १० व गा तु व स ह स यू ता ॥ ते ला क यो यि ती २ द
वी २ वि ग ह्या भ क व यि ती ॥ सर्व सिद्धि गण धी ग सर्व
द व न मस्तु ता ॥ सर्वान न्य मयी न्द वी २ त ख ड्डी स
व सिद्धि दा ॥ ॥ ध्या य क्ता ना धि म य सूरि वा दि का वि द्वा नि
मि ता ॥ त ए सि ला स न दि वी दाल द द्रि स म यु ती ॥ त गृ थ

शाम्भुजीयवि गुरुयणसकारुकी ॥ तद्वदिसामयलुच वरु
द्वीवेषु सातेन ॥ मातुमुमलुलीतय यवयुतीगतायवि ॥
॥ उगययसकायती लि दानियानियकुगी ॥ वियनीगवता
गीका सहनव्यासबधडा ॥ तल्लुसुजिगताता य
त्यालीरययामुजा ॥ गीरवेगमदीन धवली वकायितय
लाचेनी ॥ वामेसुवकलितीगीवः दन्दि ॥ वकककलिकी ॥

॥ कुडुलीगदनीयुन वलयादिवलीकता ॥ सुलमूकावृ
तावली नागयकुयवीतिना ॥ लालीकावसीयुका
विविगीत्युददीटकी ॥ मूडुमालीगलदेया याद्युव
मकटिसुमी ॥ वल्लुवकुकीवेद्य सारिगीमूकटाहली ॥
॥ सुगीवाहगवुधिव पीयमातीविविक्तय ॥ दन्दि ॥ व
लितायका यद्या ४ कन्दविनि ४ सुता ॥ वकावकुसुमात्मनी

गं वक्रता गमयतीति नीः ॥ सर्वा लीला वसीयुक्ता गजचम्पा
सुवायुगा ॥ दकनाशी मदायया दायमाना विचिन्तय ॥ द्वि
दुर्गा किं किं काष्ठं च विभगामस्मिद्वयनी ॥ दद्या
वामं शक्तिना ॥ जगद्गुप्तमलालूया ॥ कालालिकूलव
पुता विभगं ध्यावता दिनीः ॥ नवचर्मयविधानिदि
काललनशी यथा ॥ कवधनागदानीम मूककणाः

मालिनीः॥ वामनाथः॥ मदादद्याद्ययमानिविचिन्तय॥
॥ दत्ताष्टकप्रकिर्तनः॥ यागिनीः॥ शैवशक्तधर्मः॥ एका
नीमयः॥ द्वाः॥ अस्मिन्नाः॥ वलकिनीः॥ वल्लभ
वाकिनीः॥ शैवः॥ पूजयन्माहमगुलः॥ दिगुजिगुद्वय
हाः॥ कर्तिकायाः॥ धारिणी॥ बुद्धाज्यसिर्गमदि

三

माहेश्वर वसुंधरा ॥ पूर्वदिक् मया गत पूजयत्वा द
 दत्त ॥ गणेश वदु कीद वि केश्याल वया गिना ॥ चतुर्दि
 श्वलिपया द्विधिमका प्रता ॥ १० ॥ ग्राधय नमः ॥ गुता ॥ गुता ॥
 १२ ॥ कौं कौं कौं कौं कौं नमः ४ यत्नं मित्रमहा नोडमहा रंख विवीया ॥
 रुद्र मद्रु मया नीयामह कालिका काम मा जीवीयि आ विमायी आनुक

श्री यमहृदयस्तुतयार्थे त्रिभुवननाथकृष्णविनायक्यर्कमिश्रतिवर्ज